Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2023, VOL- 10/75
10.21922/srjis.v10i75.12306

संत रविदास की सामाजिक चेतना एवं ज्ञान की विरासत

धीरज प्रताप मित्र

शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

dp*mitra@bhu.ac.in*

Paper Received On: 25 FEBRUARY 2023

Peer Reviewed On: 28 FEBRUARY 2023

Published On: 01 MARCH 2023

Abstract

प्रस्तुत लेख संत रविदास के जीवन दर्शन, ज्ञान परंपरा एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता पर आधारित है। मध्यकाल में जब भारतीय समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा था तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन या तो पनप रहे थे अथवा अपनी सामाजिक स्वीकृति हेतु संघर्षरत थे उस समय निर्गुण परम्परा के संत यथा कबीर- रविदास ब्रह्म की गुणातीत व्याख्या कर ना केवल वेदादि पर प्रहार कर जातिगत आधारित कुरीतियों का विरोध कर रहे थे बल्कि सिद्ध नाथों की परम्परा में वेदादि, पाखण्ड, बाह्याडम्बर, जाति भेद के विरोध के द्वारा मनुष्यता की मुक्ति की अलग ज्योति प्रज्वलित किए। इस संत परम्परा ने 'मन की साधना ही वास्तविक साधना है, और भक्ति का सार तत्व प्रेम है'[१] की धार्मिक दृष्टि को जनमानस के सामने प्रत्यक्ष किया। कथित तौर पर नीची कही जाने वाली जाति में जन्म लेने के बावजूद संत रविदास ने अपनी वाणी, कर्म एवं मन से निवृत्ति परक प्रवृत्तिमय निष्काम कर्म की शिक्षा देने एवं तदनुरूप अपने जीवन में सांगोपांग आचरण करते हुए उच्च जीवन आदर्श भी प्रस्तुत किए। उन्होंने अपने पदों –शिक्षाओं के माध्यम से विनम्र शब्दावलियों में सामाजिक बुराईयों एवं पाखण्ड आदि का विरोध कर समाज सुधार में अपना योगदान दिया। निर्गुण संतों की दृष्टि में ब्रह्म तीन गुणों से परे है, वह सर्व व्यापी है।[२] उनके पदों में वर्णित सत्य शास्वत हैं एवं उनकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी बरकरार है।

मुख्य शब्द- परंपरा, निर्गुण, पंथ, पाखण्ड, वर्ण, समाज, अद्वैतवाद, ब्रह्म, जीवन,दर्शन

CC BY *Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

जीवन परिचय-

भारत भाषाओं एवं बोलियों से समृद्ध देश है। यहाँ विभिन्न भागों में प्रचलित विभिन्न बोलियों एवं उनके उच्चारण आदि में भिन्नता के कारण संत रविदास का नाम

विभिन्न रूपों में प्रचलित है यथा रैदास, रईदास, रयदास, रूईदास,रूद्रदास,तथा रविदास आदि।[३] इनमें से सर्वाधिक प्रचलित नाम रैदास एवं रविदास हैं। संत रविदास निर्गुण संत परम्परा के अंतर्गत आने वाले अधिकतर संतों एवं कवियों जिनमें से सर्वाधिक कथित तौर पर नीची कही जाने वाली जातियों से सम्बंधित थे की जन्मतिथि के विषय में विद्वानों में मतभेद रहा है। उनके पदों के माध्यम से उनकी जातिगत-पेशेगत सम्बद्धता का पता तो चलता है किन्तु जन्मतिथि के विषय में पूर्ण स्पष्टता का अभाव ही रहा है। आचार्य पृथ्वी सिंह, रविदास संप्रदाय के विद्वान संत करम सिंह के दोहे को उद्धृत करते हुए संत रविदास का जन्म विक्रमी संवत १४३३(१३७६ ई०) में माघ शुक्ल पूर्णिमा तिथि को हुआ बताते है।

चौदह सौ तैंतीसकी, माघ सुदी पन्दरास।
दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री रविदास।।

संत रविदास की मृत्यु तिथि संबंधी स्थिति स्पष्ट करने हेतु इस दोहे से सन्दर्भ लिया जाता है, जिसमे रविदास जी के वृद्ध शरीर के रवि में मिलने की बात कही जा रही-

पंद्रह सौ चउरासी भी चित्तौर मंह भीर।
जर जर देह कंचन भई रवि रवि मिल्यौ शरीर।।[४]

उपर्युक्त दोहों से संत रविदास के जीवन विषयक सन्दर्भ लेने पर उनकी आयु लगभग १५१ वर्ष आती है जिससे विद्वानों में संदेह उत्पन्न होता है क्योंकि इतनी सामान्यतः प्राप्त करना मुश्किल प्रतीत होता है। इस बाबत धर्मपाल मैनी का मत है कि "अन्य किसी प्रबल प्रमाण के अभाव में हमें संवत १४३३ की माघ पूर्णिमा जन्मदिवस मान लेने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए थी लेकिन उनकी मृत्यु तिथि संवत १५८४ पर्याप्त विश्वसनीय प्रतीत होती है। इस प्रकार उनकी आयु १५१ वर्ष आती है जो बहुत संभव नहीं है. दूसरी बात जन सामान्य में यह प्रचलित है कि रविदास जी कबीर से आयु में कुछ छोटे थे। अतः यदि उनका जन्म संवत १४५६ के आसपास मान लिया जाए तो रामानंद के शिष्य होने, कबीर से आयु में कुछ छोटे और समकालीन होने तथा लगभग १२८ वर्ष

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की आयु पाने में विशेष आपत्तियों को स्थान नहीं रहता है। डॉ. बेनीप्रसाद शर्मा जो कि रविदास साहित्य के अधिकारी विद्वान माने जाते हैं ने संत रविदास का जीवनकाल १२८ वर्ष मानते हुए उनकी जन्मतिथि १४५६ ई० पर सहमती जताते हैं एवं प्रचलित मान्यता है कि संभवत रविवार को जन्म होने की वजह से इनका नाम रविदास पड़ा।[५]

संत रविदास के जन्मस्थान के विषय में भी विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर भिन्न-भिन्न मत प्रचलित हैं। विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार 'आदि ग्रन्थ' में संकलित संत रविदास के पदों से यह पता चलता है कि उनका जन्म दलित जाति की कुटबाँढला नामक शाखा में हुआ था। इस जाति से सम्बंधित लोग बनारस के आसपास के क्षेत्रों में मरे हुए मवेशियों को ढोने के काम में संलग्न हुआ करते थे।

नागर जना मेरी जाति बिखिआत चमार।
मेरी जाति कुटबाँढला ढोर ढ़ोंवता नितहि बनारैसी आस पास।।[६]

तथा

जा के कुटुंब के ढेढ सब ढोर।
ढोवंत फिरहि अजहू बनारसी आसपास।।[७]

उपर्युक्त पदों के अनुसार संत रविदास की जाति के विषय में कोई संदेह शेष नहीं रह जाता किन्तु उनके जन्म स्थान के विषय में भी अनेक मत प्रचलित हैं। कुछ लोग राजस्थान के मांडवगढ़ में संत रविदास की शिष्यों की अधिक संख्या तथा वहीँ रविदास कुण्ड व् रविदास कुटी की स्थिति होने की वजह से उन्हें मांडवगढ़ या मंडावर के निवासी बताते हैं।[८] 'रैदास रामायण' में संकलित पद के अनुसार संत रविदास का जन्मस्थान बनारस के निकट क्षेत्र में 'मांडूर' को माना जाना चाहिए-

काशी डिग मांडूर इसथाना शुद्ध वरण करत गुजराना।
मांडूर नगर लीन ओतारा रविदास शुभ नाम हमारा।।

संत रविदास की जन्मतिथि एवं जन्म स्थान की तरह ही उनके परिवार एवं माता-पिता के विषय में भी स्पष्ट रूप से कोई साक्ष्य उपलब्ध ना होने की वजह से विद्वानों में भ्रम

की स्थिति है। अनेक विद्वान् भिन्न भिन्न मत रखते हैं, डॉ. काशीनाथ सिंह भविष्य पुराण को उद्धृत करते हुए संत रविदास के पिता जी का नाम मानदास बताते हैं-

मानदासस्य पुत्रो रविदास इति विश्रुतः[९]

किन्तु 'रविदास रामायण' में उनके पिता जी का नाम रहु दिया है। यह नाम जनसामान्य में उनके पिता जी के प्रचलित नाम रघू से मिलता जुलता है। उनकी माता जी का नाम प्रचलित मान्यताओं के अनुसार कुछ लोग धुरबिनिया तो कुछ लोग करमादेवी बताते हैं। रविदासी परम्परा के कुछ लोग इनके पिता जी का नाम रघू एवं माता जी का नाम धुरबिनिया ही स्वीकारते हैं।

संत रविदास के बारे में प्रचलित है कि उनका मन जीवन के शुरूआती चरण में ही साधु-संतों में लग गया था। यद्यपि कि उनका बचपन विषम स्थितियों से भरा पड़ा था तथापि उनके धार्मिक रूझानों से चिंतित माता-पिता ने बचपन में ही 'लोना' नामक लड़की से इनका विवाह संपन्न करा दिया जिनसे इनको एक पुत्र विजयदास के होने की मान्यता है।[१०] रविदास के बचपन में ही साधु संतों के प्रति सेवा भाव एवं उनके अपने चर्म आधारित कर्म में संलग्न होने का सन्दर्भ अनंतदास कृत 'रैदास परिचई' में मिलता है-

बड़ो भयौ तब न्यारौ कीन्हौ, बांटै आयौ से बाँटी न दीनौ।
राख्य बावरी की पछिवारै, कछु न कह्यो रैदास बिचारौ।।
सीधा चाम मोलि आवै, तिनकी पनही अधिक बनावै।
टूटे फाटे जरवा जोरे, मसकत करि काहु न निहारै।।

संघर्षमय जीवन परिस्थितियों में होने के बावजूद रविदास जी साधू संतों के सत्संग आदि में प्रवृत्त रहें। उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के सामान ही उनके गुरु के विषय में भी विभिन्न सन्दर्भों में भिन्न मत मिलते हैं।

अनंतदास अपनी रचना 'भक्त रत्नावली' में संत रविदास को रामानंद का शिष्य बताते हुए लिखते हैं कि रामानंद के शिष्य कबीर तथा रैदास चमार थे-

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रामानंद के शिष्य कबीर,जिने चीन्है भगवंत।

और ऐक रैदास चमारा, जन नारद लीनो औतारा।।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि रामानंद के बारह शिष्य थे, जिनमें से एक संत रविदास भी थे. अन्य शिष्य कबीर, धन्ना, सेना, पीपा, भवनंद, सुखानंद,आभानंद,सुरसुरानंद, परमानंद, महानंद, श्री आनंद थे।[११]

नाभादास ने भी 'भक्तमाल' में रामानंद के अन्य शिष्यों का वर्णन करते हुए संत रविदास का नामोल्लेख किया है-

अनंतांद, कबीर, सुखा, सुरसुरा, पद्मावति, नरहरि।

पीया, भवानंद, रैदास, धना, सेन, सुरसरी की धरहरी।।

रविदास जी ने अपने पद के द्वारा जिसमे वो लिखते हैं कि रामानंद मुझे गुरू रूप में प्राप्त हुए जिससे मुझे ब्रह्म की प्राप्ति हुई में रामानंद को गुरु बताया है-

रामानंद मोहि गुरू मिल्यों, पाया ब्रह्म विलास।

रामनाम अमी रस पीयौ, रविदास हि भयौ खलास।।

दूसरी तरफ सेन नाई ने 'रविदास-कबीर गोष्ठी' में रविदास को कबीर का शिष्य माना है तदनुसार संत रविदास कहते हैं कि-

धनि कबीर धनि वौ सतगुरु, जिन परम तत लखाय।

कहै रैदास सुनो हो स्वामी, पण तुम्हारी आया।।

इसी प्रकार कबीर ने भी रविदास जी के बारे में 'संतनि में संत रविदास..' कह कर उनके महत्व का परिचय जनमानस को दिया था।[१२]

डॉ. काशीनाथ उपाध्याय इस विवाद को संदर्भित करते हुए कहते हैं कि "यह संभव है कि रविदास जी ने अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में रामानंद जी के संपर्क में आए हो और उन्हें गुरू मानते रहे हों तथा बाद में कबीरदास जी से दीक्षा लिए हो..."

कथित रूप से नीची कही जाने वाली जाति में जन्म लेने तथा किसी भी विद्यालय में विधिवत शिक्षा प्राप्त न करने के बावजूद भी संत रविदास जी ने अपने जीवन एवं

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आतंरिक अनुभवों के आधार पर आध्यात्मिक उन्नति के विषय में जो कहा उन पदों से उनकी हिंदी, उर्दू, फारसी एवं अनेक स्थानीय भाषाओँ पर पकड़ स्पष्ट होती है। उनके द्वारा देश भर में किए गए देशाटन की वजह से राजस्थान, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत आदि क्षेत्रों में उनके अनुयायी बने। उनके शिष्यों को रविदासिया पंथ के लोगों के नाम से भी जाना जाता है। पंथ को बर्गेस एवं पार्क एक ऐसे संगठन के रूप में परिभाषित करते हैं जो विद्यमान रूढ़ियों के प्रति द्वेष की भावना रखता हो।[१३] संत रविदास के शिष्य के रूप में जहाँ डॉ. धर्मपाल मैनी ने मीराबाई को संदर्भित किया है वहीँ डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी मीराबाई का संत रविदास से सम्बन्ध बताया है। मीराबाई के पदों में संत रविदास का नाम स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है-

रैदास संत मिले मोहि सतगुरु, दीन्ही सूरत सहदानी।

इसी प्रकार

मीरा ने गोविन्द मिल्या जी, गुरू मिलिया रैदास।

प्रियादास ने 'भक्ति रसबोधिनी' में चित्तौड़ की झाली रानी को संत रविदास की शिष्य बताया-

बसत चित्तौर मांझ रानी एक झाली नाम।
नाम बिन काम खाली आनी शिष्य भई है।।

संत रविदास का धार्मिक दृष्टिकोण-

मध्यकाल की संक्रमणकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के बीच धार्मिक पाखण्ड, कर्मकांड आदि को नकारते हुए संत रविदास न केवल अपनी प्रेमाभक्ति के माध्यम से ईश्वर से स्वयं जुड़े बल्कि जीवन –जगत के वास्तविक रहस्यों को सरल रूप से बतलाते हुए उसे सभी धर्मों एवं जातियों के व्यक्तियों के लिए सर्वसुलभ बना दिया। ई. बी. टायलर का कथन है कि "धर्म आध्यात्मिक सत्ता में विश्वास है"[१४] एवं इसी सन्दर्भ में दुर्खिम का मत है कि "धर्म ने उन सभी को जन्म दिया है जो समाज में आवश्यक हैं, यह इसलिए क्योंकि समाज की धारणा धर्म की आत्मा है।"[१५] उन्होंने बाह्य

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आडम्बरों को नकारते हुए मानवधर्म को स्थापित करने का प्रयत्न किया। उनकी वाणी ने लोगों के अंतर्मन पर प्रभाव डालने के साथ ही वैश्विक शांति एवं भाईचारे का सन्देश प्रसारित किया।

संत रविदास जी ने तत्कालीन समाज में प्रचलित सगुण- निर्गुण भक्ति मार्ग एवं कठिन योग, तप, जागरण, हठयोग, प्राणायाम, व्रत-तीर्थ, विभिन्न वाद यथा एकेश्वरवाद, ब्रह्मवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत आदि तार्किक बहस एवं वाद-विवाद खड़ा करने वाली बहसों से इतर शुद्ध भक्तिमार्ग जो नामभक्ति अथवा प्रेमाभक्ति के रूप में प्रसिद्द हुआ पर जोर दिया।

संत रविदास जी ने शरीरधारी गुरू की महत्ता को निराकार ईश्वर के ऊपर बताया। उन्होंने गुरू को मनुष्य रूप में परमात्मा माना एवं भव सागर से तरने में पतवार की भांति गुरु को सहायक बताया है जिस प्रकार नदी पार करने हेतु नाव को खेने के लिए पतवार आवश्यक होती है-

गुरु ज्ञान दीपक दिया, बाती दई जलाय।
रविदास हरि भगति कारनै,जनम मरण विलमाय।।

भौ सागर दूभर अति, सिन्धु मूरिख यहू जान।
रविदास गुरु पतवार है, नाम नाव करि जान।।

रविदास जी कहते हैं कि सतगुरु की कृपा से न केवल पिछले जन्मों के पाप नष्ट होते हैं बल्कि इस जीवन के भी सांसारिक विषय वासना एवं संताप मिट जाते हैं, गुरु वह मार्ग दिखलाता है जिसके अनुसरण से ना केवल मन के संताप नष्ट होते हैं बल्कि तृष्णा भी बुझती है एवं पिछले जन्मों आदि के पाप कर्म भी नष्ट हो जाते हैं-

सतगुरु हमहु लखाई बाट
जनम पाछले पाप नसाने, मिटीगौ सबु संताप।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कही रविदास गुरु राह दिखावई
त्रिखा बुझि मिति मन संताप।।

संत रविदास गुरु द्वारा प्रदत्त नाम दीक्षा को दीर्घ मन्त्रों- पाठों आदि के स्थान पर जपने की बात कहते हैं बजाय जटिल कर्मकांड, योग-प्राणायाम आदि में संलग्न होने के। इस प्रकार वह आम जनमानस के लिए ईश्वर भक्ति का सरलतम रूप प्रस्तुत करते हैं जिससे वो शास्त्र अध्ययन एवं योग की कठिन जटिलताओं में ना फंसने पाए-

जिह्वा सो ओंकार जप, हत्थां सो कर कार।
राम मिलहि घर आई कर, कहि रैदास विचार।।

इड़ा पिंगला सुसुम्ना, बिध चक्र प्राणायाम।
रविदास हों सबहि छांडीयो, जबहि पाईहु सत्तनाम।।

रविदास जी ईश्वर नाम जो गुरु द्वारा प्रदत्त होता है को साक्षात् अमृत बताते हुए कहते हैं की यह वह पारस है कि लौह सदृश व्यक्ति भी स्पर्श मात्र अर्थात इसके जपने भर से स्वर्ण हो जाता है, फिर उसे किसी भी कर्मकाण्ड, चाप-तिलक, व्रत आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती है-

नामु तेरो आरती भजनु मुरारे
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पसारे
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरो केसरो ले छिडकारे
नामु तेरो अभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि का उचारे

रविदास जी प्रभु नाम के स्मरण को इस प्रकार बताते हैं कि उन्हें उसकी लत लग गयी है जो छोड़े से ना छूटती है। अब वो प्रभु के सहारे हो दिन रात मानसिक स्मरण-जब में लीन रहते हैं। अब वो सब कुछ अपना प्रभु को समर्पित कर चुके हैं-

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अब कैसे छूटै नाम रट लागी

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी । जाकी अंग अंग बास समानी।।

प्रभुजी तुम धन बन हम मोरा । जैसे चितवत चंद चकोरा ।।

प्रभुजी तुम दीपक हम बाती । जा की जोति बरे दिन राती।।

प्रभुजी तुम मोती हम धागा । जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।।

प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा । ऐसे भक्ति करे रैदासा।।

रविदास जी सभी प्रकार की शास्त्रीय चर्चाओं,वाद-प्रतिवाद को त्यागकर प्रभु नाम स्मरण पर जोर देते हैं-

रैदास राति न सोहए, दिवस न करिये स्वाद ।

अह-निस हरीजी सुमिरिये, छाड़ि सकल प्रतिवाद ।।

रविदास जी चूंकि बचपन से ही साधू संतों के सानिध्य को पसंद करते थे, उन्होंने सत्संग की महिमा एवं आवश्यकता को अपने पदों में भी वर्णित किया यथा-

जो जन दुष्ट कुमारगी, बइठहि नंहि तिंह पास ।

जो जन संत सुमारगी, तिन पायं लागो रविदास ।।

प्रभुजी संगति सरन तिहारी। जग जीवन राम मुरारी ।।

X X X

तुम चंदन हम हरंड बापुरे, निकट तुम्हारे बासा ।

नीच रूख तै ऊँच भए हैं, तुम्हरी बास सुबासा ।।

जाति भी ओछी पांति भी ओछी, ओछा कसब हमारा ।

तुम्हारी कृपा तै ऊँच भए हैं, कहै रविदास चमारा।।

संत रविदास जी ने जिस प्रकार का क्रियात्मक कर्मप्य जीवन जिया तथा गृहस्थ जीवन की चुनौतियों से मुंह नहीं मोड़ा उसी का सन्देश अपने पदों के माध्यम से भी दिया यथा-

सौ बरस ल जगत मंहि जीवत रहि करू काम ।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

'रविदास करम ही धरम है, करम करहु निष्काम।।
धरम हेतहिं कीजिये, सौ बरस लों कार ।
'रविदास करमहि धरम है, फल मंहि नहि अधिकार ।।

रविदास जी कहते हैं कि जो भक्त निश्चिन्त भाव से ईश्वर का स्मरण करता रहता है, ईश्वर उसकी चिंता अर्थान लालन- पालन की जिम्मेदारी स्वयं उठाते हैं-

जिह्वा भजे हरिनाम नित, हत्थ करंहि नित काम ।
'रविदास' भए निहचिंत हम, मन चिंत करैगे राम ।।

संत रविदास जी सांसारिक बंधनों से विरक्त भाव होना, एकमात्र ईश्वर के शरणागत होने उनके नाम को भजने को ही भक्ति कहते हैं. उसके अतिरिक्त दान, संसार का त्याग, माला पहनना, हठयोग आदि को व्यर्थ बतलाया। सच्ची भक्ति वो अहम् को त्यागकर ईश्वर शरणागत होने को मानते हैं-

भगति न निंद्रा साधैं, भगति न वैराग बांधै ।
भगति न ऐ सब वेद बड़ाई ।
भगति न मूंड मुंडाए, भगति न माला दिखाई।
भगति न चरण धोवाएं, ऐ सब मुनि जन गाई ।
भगति न तौ लौं जानी, जौलौं आप कूं आप बखानी ।
जोई जोई करै, सोई सोई कर बड़ाई ।
आपौ गयौ तब भगति पाई, औसी भगति है भाई।
राम मिल्यौ अपनौ गुन खायौ, रिद्धि सिद्धि सबै जु गंवाई।
कहै रविदास छूटी सब आस, तब हरि ताही के पास ।

संत रविदास का सामाजिक दृष्टिकोण-

मध्यकाल में भारतीय समाज अनेक प्रकार की जटिलताओं एवं अंतर्विरोधों से ग्रसित था। जाति-धर्म आधारित भेदभाव, रूढ़ियाँ प्रबल थी तथा पाखण्ड का बोलबाला था।[१६] यद्यपि संत रविदास का मूल उद्देश्य भक्ति थी तथापि समाज में व्याप्त भेदभाव,

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

असमानता, पाखण्ड, रूढ़ीवाद आदि कुरीतियों को देखने के बाद वो उससे अछूते नहीं रह सके बल्कि जातिगत हीनता को दूर करने हेतु ना केवल अपनी जाति को खुले तौर पर बताते बल्कि वेदों का विरोध कर सामाजिक कदाचार के खिलाफ आवाज भी उठाया। संत रविदास ने कहा कि वो उसे अपना गुरु मानते हुए उसकी वन्दना करते हैं जिसने सर्वप्रथम वेदों का बहिष्कार किया।[१७] उन्होंने भक्ति के साथ समाज सुधार के लिए भी अपने पदों के माध्यम से जनजागरूकता का प्रयास किया जिससे समाज में शांति, सहअस्तित्व व् भाईचारे का प्रसार हो सके।

संत रविदास में तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त वर्णगत व्यवस्था को निरर्थक कहा तथा एक ही परमात्मा को सब का जीवन दाता माना-

ब्राह्मण, खत्री, वैस, सूद रैदास जनम ते नाहि ।
जो चाहइ सुबरन कउ, पावई करमन माहि ।।

जन्म जात मत पूछिए, का जात अरु पात ।
रविदास पूत सभ प्रभ के, कोइ नहिं जात कुजात ।।[१८]

रविदास जी ने जाति भेद को महारोग बताया जो मानवता हेतु विनाशक है, उन्होंने कहा कि जाति भेद के चक्कर में सब लोग उलझ गए हैं जिससे उत्पन्न समस्याओं से मानवता की हानि हो रही है -

जात-पात के फेर महि, उरझि रहइ सभ लोग ।
मनुष्यता कू खात हइ, 'रविदास' जात का रोग।[१९]

संत रविदास जी ने सभी मनुष्यों की एक ईश्वर से उत्पत्ति बताते हुए ब्राह्मण- चमार भेद भाव पर प्रश्न उठाया और कहा की जब सर्वत्र संसार उस एक ही परमात्मा से उत्पन्न हुआ है तब समाज में ब्राह्मण- चमार आदि जन्म आधारित भेदभाव का क्या औचित्य ठहरता है-

रविदास इक ही नूर ते, जिमि उपज्यों संसार ।
ऊँच नीच किह बिध भये, ब्राह्मन अरु चमार ।।[२०]

रविदास जी जन्म जाति आधारित सम्मान का विरोध करते हुए गुणहीन ब्राह्मण की अवहेलना तथा ज्ञानवान चंडाल की आराधना करने को कहते हैं-

रविदास ब्राह्मण मति पूजिए, जउ होवे गुनहीन ।
पूजिहि चरन चंडाल के, जउ होवे गुण परवीन ।।[२१]

रविदास जी ने तात्कालिक समाज में प्रचलित दो प्रमुख धर्मों यथा हिन्दू-मुस्लिम के बीच पूजा पद्धति एवं सृष्टी सर्वप्रधान होने के नाम पर होने वाले विवाद को निम्न पदों के माध्यम से निपटाने का प्रयास किया-

रविदास पेखिया सोध करि, आदम सभी समान ।
हिंदू मूसलमान कउ, सृष्टा इक भगवान ।।

मंदिर मस्जिद दोउ एक है, इन मंह अंतर नांहि ।
रैदास राम रहमान का झगड़उ कोउ नांहि ।।[२२]

रविदास जी ने मंदिर मस्जिद के भेद को समाप्त कर सब जगह ईश्वर की उपस्थिति महसूस करने पर जोर दिया-

रविदासन पूजइ देहरा, अरू न मस्जिद जाय ।
जहं तहं ईस का बास है, तहं तहं सीस नवाय ।।

रविदास जी ने हुन्दुओं-मुस्लिमों की पूजा पद्धतियों , आडम्बरों यथा छाप-तिलक आदि को ठगी बताते हुए उनका विरोध किया-

जो खुदा पश्चिम बसै, तौ पूरब बसत है राम ।
'रविदास' सेवा जिह ठाकुर कूं तिह का ठांव न नाम।।

माथे तिलक हाथ जप माला, जग ठगने कूं स्वांग बनाया।
मारग छांडि कुमारग डहके, साँची प्रीत बिनु राम न पाया।

रविदास जी ने बाह्याचारों यथा नाच-गाना, मुंड मुंडाना, तपस्या आदि को निरर्थक बताया है, वो परम तत्व को मानव मात्र के भीतर पहचानने पर जोर दिए-

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कहा भयो नाचे अरु गाये, कहा भयो तप कीन्हें।
कहा भयो जे चरन पखारे, जौ लौं तत्त्व न चीन्हें।
कहा भयौ जे मूण्ड मुण्डाए, कहा तीरथ ब्रत कीन्हें।

रविदास जी ने समाज में प्रचलित जीव हत्या, बलि, हलाल आदि के माध्यम से देवी-देवताओं को प्रसन्न करने की परंपरा को दोषयुक्त बताया तथा अपने पदों के माध्यम से उनकी निंदा की-

रविदास जीव कूं मारिकर, कैसे मिला है खुदाय ।
पीर पैगंबर, औलिया, कोउ न कहइ समुझाय ।।
'रविदास' मूंडह काटि करि, मूरख कहत हलाल ।
गला कटावहु आपना, तउ का होइहि हाल ।।
रविदास जीव मत मारहिं, इक साहिब सभ मांहि ।
सभ मांहि एकउ आतमा, दूसरह कोउ नांहि ।।

आधुनिकता एवं वैश्वीकरण के युग में जब मनुष्य दूसरों पर नियंत्रण करने तथा अधिकाधिक भौतिक सुख संपत्ति के साधनों को एकत्रित करने में जुटा है तथा इन सबके बीच असमानता, गैरबराबरी का रोग सर्व व्यापी हो चुका है। हमें संत रविदास जी के पदों में उनकी विश्वदृष्टि का भान होता है जो ना केवल तत्कालीन समाज के मार्गदर्शक थे बल्कि वर्तमान में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गए हैं। पराधीनता के विषय में उन्होंने लिखा कि-

पराधीन को दीन क्या, पराधीन बेदीन ।
रैदास दास पराधीन कौ, सबहिं समझे हीन ।।
ऐसा चाहू राज मैं, जहाँ मिले सबन को अन्न ।
छोट बड़ो सभ सम बसें, रैदास रहे प्रसन्न ।।[२३]

उपसंहार-

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विकृति परिवर्तन को जन्म देती है। संत रविदास जिस समय- समाज में उत्पन्न हुए वो ना सिर्फ संस्कृतियों के संक्रमण का काल था बल्कि सामाजिक स्तर पर विभिन्न मुठभेड़ जारी थे। कुछ लोग बहिष्कृत हो रहे थे तो कुछ लोग स्वीकृत किए जा रहे थे और कुछ रूपांतरित हो रहे थे। जन जीवन की समस्याओं एवं अभावों के बीच संत रविदास ने कथित नीची कहे जाने वाले कुल में जन्म प्राप्त करने के पश्चात भी अपने अनुभवजन्य ज्ञान से न केवल सर्व समाज को दिशा देने का कार्य किए बल्कि दबे कुचले, मानसिक रूप से हीनभावना से ग्रस्त लोगों को आत्मविश्वास से भरने का कार्य किए। संत रविदास जी ने धार्मिक आडम्बरों, जनमानस में व्याप्त भेदभाव –ऊंच नीच की भावना का तार्किक रूप से खंडन एवं अपने कर्तव्यों का सुचारू निर्वहन के द्वारा समाज में आदर्श एवं पूजनीय के रूप में प्रतिष्ठित हुए. अपने पदों के माध्यम से उन्होंने धर्म, समाज, मानव मात्र के प्रति व्यवहार आदि के लिए जो आदर्श स्थापित किए वो ना केवल तत्कालीन समय के लिए मार्गदर्शक थे बल्कि वर्तमान की आधुनिकता की दौड़ में संसाधनों की लूट में व्यस्त दुनियां के लोगों क लिए भी अनुकरणीय हैं। संत रविदास का जीवन एवं दर्शन दोनों ही मानव मात्र के कल्याण भावना से युक्त रहा जो सभी समाजों के व्यक्तियों के लिए अपनाने योग्य एवं दिन प्रतिदिन के जीवन व्यवहार में लाने योग्य है। उनके सर्वकालिक दर्शन की उपयोगिता सदैव ही मानव समाज में बनी रहेगी।

सन्दर्भ-

शर्मा,रामविलास(२००९), भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ ११९

मिश्र,भुवनेश्वरनाथ 'माधव'(१९७३),वैष्णव साधना और सिद्धांत: हिंदी साहित्य पर उसका प्रभाव,बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना,पृ २४७

पाण्डेय,संगम लाल, संत रैदास: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ ९

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शर्मा,बी.पी., श्री गुरु रविदास चरितं, पृ ५१
शास्त्री,स्वामी रामानंद, संत रविदास और उनका काव्य, पृ८४
त्रिपाठी, विश्वनाथ(२००७), हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, मलिक एंड कंपनी प्रकाशन,जयपुर, दिल्ली, पृ २४ पूर्वोक्त
सिंह, गुरुचरण, संत रविदास: विचारक और कवि, पृ२२
भविष्य पूराण, खंड ४,अध्याय १७
शास्त्री, स्वामी रामानंद एवं पाण्डेय, वीरेंद्र, संत गुरु रविदास और उनका काव्य, पृ७२
द्विवेदी, हजारीप्रसाद(२००८), हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ ५५
सिंह, पद्म गुरुचरण(१९७७), संत रविदास: विचारक और कवि, नव चिंतन प्रकाशन, जालंधर, पृ १३१
पार्क,रोबर्ट इ. एंड बर्गेस, अर्नेस्ट डब्ल्यू(१९२१), इंट्रोडक्शन टू द साइंस ऑफ़ सोशियोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, पृ ८७२
टायलर,ई वी(१९२४), प्रिमिटिव कल्चर, न्यूयार्क
दुर्खीम,इमाइल(१९१२), द एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ़ रिलीजियस लाइफ, द मैकमिलन कंपनी न्यूयार्क, पृ १७
अहिरवार, रामकुमार(२००८), संत रविदास जीवन और दर्शन, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, पृ १३
अहिरवार, रामकुमार(२००८), संत रविदास जीवन और दर्शन, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, पृ १५
बाबा, संत सुरिंदर दास, जगतगुरु रविदास अमृत वाणी एवं संक्षिप्त जीवन, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, वाराणसी, यू पी, पृ २६८
पासवान, राजेश कुमार(२००७), दलित अस्मिता और रैदास का काव्य, पी एच डी शोध प्रबंध, भारतीय भाषा केंद्र, भाषा साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पृ ४० पूर्वोक्त
बाबा, संत सुरिंदर दास, जगतगुरु रविदास अमृत वाणी एवं संक्षिप्त जीवन, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, वाराणसी, यू पी, पृ २६९
दीपक, देवेन्द्र (२०११), संत रविदास की रामकहानी, आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली, पृ १६७
बाबा, संत सुरिंदर दास, जगतगुरु रविदास अमृत वाणी एवं संक्षिप्त जीवन, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, वाराणसी, यू पी, पृ ११७

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies